• शुभता...

स्वास्तिक

हिंदू धर्म में स्वास्तिक को बेहद शुभ और मंगलकारी चिह्न माना जाता है।घर में पूजा हो, कोई नया काम शुरू करना हो, गृह प्रवेश हो या फिर कोई धार्मिक अनुष्ठान, कई जगहों पर स्वास्तिक बनाकर कार्य की शुरुआत करने की परंपरा है। स्वास्तिक शब्द का संबंध सु और अस्ति से माना जाता है. इसका भाव शुभता, कल्याण और मंगल से जुड़ा हुआ है। धार्मिक मान्यताओं में स्वस्तिक को चारों दिशाओं से शुभता और मंगल का प्रतीक भी माना जाता है।

▸ अक्सर आपने देखा होगा कि पूजा के दौरान लाल या कुमकुम से स्वास्तिक बनाने के बाद उसके दोनों ओर दो सीधी रेखाएं भी खींची जाती हैं। ये रेखाएं सिर्फ सजावट के लिए नहीं बनाई जातीं, बल्कि इनके पीछे धार्मिक मान्यता जुड़ी हुई है। एक प्रचलित मान्यता के अनुसार, स्वास्तिक के दोनों ओर बनाई जाने

वाली ये दो रेखाएं शुभ और लाभ का प्रतीक मानी जाती हैं। वहीं कुछ परंपराओं में इन्हें ऋद्धि और सिद्धि से जोड़ा जाता है। इस तरह स्वास्तिक के साथ इन रेखाओं को बनाने का भाव घर-परिवार में मंगल, समृद्धि और सफलता की कामना से जुड़ा माना जाता है.

▸ स्वास्तिक को भगवान गणेश के स्वरूप से जोड़कर देखने की भी धार्मिक परंपरा है। गणेश जी को विघ्नहर्ता और शुभ कार्यों का देवता माना जाता है। यही वजह है कि किसी भी नए या मांगलिक काम की शुरुआत से पहले गणेश पूजन किया जाता है और कई जगह स्वास्तिक भी बनाया जाता है। गणेश जी की पत्नी के रूप में ऋद्धि और सिद्धि का उल्लेख धार्मिक परंपराओं में मिलता है. इसी कारण स्वास्तिक के दोनों ओर ऋद्धि-सिद्धि का प्रतीक मानकर दो रेखाएं बनाने की परंपरा को गणेश पूजन से भी जोड़ा जाता है।

▸ स्वास्तिक की आकृति चार भुजाओं से मिलकर बनती है। धार्मिक मान्यताओं में इन चार भुजाओं को अलग-अलग प्रतीकों से जोड़ा गया है। कहीं इन्हें चार दिशाओं का प्रतीक माना गया है तो कहीं चार वेद, चार पुरुषार्थ या जीवन के चार प्रमुख आयामों से जोड़ा जाता है। चार पुरुषार्थ यानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को भी स्वास्तिक की चार भुजाओं से जोड़कर देखा जाता है। इसी तरह चारों दिशाओं में मंगल और शुभता के विस्तार का भाव भी इसकी आकृति में देखा जाता है।

• शिव भक्ति...

रुद्राक्ष धारण करना

सावन का पूरा महीना महादेव की भक्ति और साधना के लिए बहुत विशेष माना जाता है। इस पावन समय में शिवभक्त अपनी श्रद्धा के अनुसार जल चढ़ाते हैं और रुद्राक्ष धारण करते हैं। मान्यता है कि सही विधि और

अपनी राशि को ध्यान में रखकर रुद्राक्ष पहनने से जीवन में शांति आती है और ग्रहों के बुरे प्रभाव खत्म होते हैं। सावन के दिनों में लिया गया यह छोटा सा उपाय जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है. हालांकि, इसे धारण करने से पहले सही नियम और तरीका जानना बहुत जरूरी होता है। आइए समझते हैं कि किस राशि के व्यक्ति के लिए कौन सा रुद्राक्ष सबसे उत्तम रहेगा और इसे कैसे पहनना चाहिए?

रुद्राक्ष धारण करने की सही विधि और समय-रुद्राक्ष को केवल खरीदकर पहन लेना काफी नहीं होता, इसे सही विधि से धारण करना चाहिए। रुद्राक्ष को सावन के सोमवार या शिवरात्रि के दिन गंगाजल और कच्चे दूध से शुद्ध करके शिवलिंग से स्पर्श कराकर धारण करें। इसे लाल या पीले धागे अथवा चांदी या सोने की चैन में धारण करें। जब आप मंदिर में जाकर शिवलिंग से स्पर्श कराने के बाद इसे पहनते हैं तो इसका पूरा फल मिलता है। सही दिन और सही विधि से पहना गया रुद्राक्ष व्यक्ति को सकारात्मकता देता है इसलिए सावन के सोमवार का दिन इसके लिए सबसे उत्तम माना गया है। इस दिन पूरी भक्ति के साथ रुद्राक्ष को शुद्ध करके ही अपने गले या हाथ में पहनना चाहिए।

खान-पान और दैनिक जीवन के जरूरी नियम-रुद्राक्ष धारण करने के बाद कुछ कड़े नियमों का पालन करना बहुत आवश्यक होता है। रुद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति को मांसाहार, शराब और नशीली वस्तुओं से सख्त परहेज करना चाहिए। अपने खान-पान को पूरी तरह साफ और शुद्ध रखना चाहिए। इसके साथ ही सोते समय या श्मशान या अशौच स्थानों पर जाते समय इसे उतारकर मंदिर में रख देना चाहिए। इन स्थानों से वापस आने और स्नान करने के बाद ही इसे फिर से पहनना चाहिए। अगर आप इन सभी नियमों को ध्यान में रखकर रुद्राक्ष पहनते हैं तो भगवान शिव की कृपा हमेशा बनी रहती है। नियमों का सही से पालन करने पर ही रुद्राक्ष धारण करने का पूरा लाभ प्राप्त होता है।

राशियों के अनुसार सही रुद्राक्ष का चुनाव

- **मेष व वृश्चिक राशि :** अग्नि देव का 3 या 11 मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- **वृषभ व तुला राशि :** 6 मुखी या 13 मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- **मिथुन व कन्या राशि :** 4 मुखी या 10 मुखी रुद्राक्ष पहनना चाहिए।
- **कर्क राशि :** 2 मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- **सिंह राशि :** 1 मुखी या 12 मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- **धनु व मीन राशि :** 5 मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- **मकर व कुंभ राशि :** 7 मुखी या 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

नई चीज पर हल्दी-कुमकुम लगाने की परंपरा क्यों- भारतीय संस्कृति में किसी भी नए काम की शुरुआत शुभ तरीके से करने की परंपरा रही है।

माना जाता है कि जब घर में कोई नई वस्तु आती है, तो उसका इस्तेमाल शुरू करने से पहले भगवान का नाम लेने और पूजा करने से काम में सकारात्मकता बनी रहती है। हिंदू धर्म में हल्दी को शुभता, शुद्धता और समृद्धि से जोड़कर देखा जाता है...

नई गाड़ी या सामान खरीदते क्यों लगाते हैं हल्दी-कुमकुम

घर में नई गाड़ी आए, नया वाहन खरीदा जाए या कोई नया सामान घर में लाया जाए, तो कई परिवारों में सबसे पहले उसकी पूजा की जाती है। पूजा के दौरान नई चीज पर हल्दी और कुमकुम लगाने की परंपरा भी काफी पुरानी है। आपने अक्सर देखा होगा कि नई कार, बाइक, घर के दरवाजे, बर्तन या किसी नए उपकरण पर हल्दी-कुमकुम लगाया जाता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर ऐसा क्यों किया जाता है?

नई चीज पर हल्दी-कुमकुम लगाने की परंपरा क्यों- भारतीय संस्कृति में किसी भी नए काम की शुरुआत शुभ तरीके से करने की परंपरा रही है। माना जाता है कि जब घर में कोई नई वस्तु आती है, तो उसका इस्तेमाल शुरू करने से पहले भगवान का नाम लेने और पूजा करने से काम में सकारात्मकता बनी रहती है। हिंदू धर्म में हल्दी को शुभता, शुद्धता और समृद्धि से जोड़कर देखा जाता है, जबकि कुमकुम को मंगल और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि किसी नई वस्तु का इस्तेमाल शुरू करने से पहले उसकी पूजा करने और हल्दी-कुमकुम लगाने से उस वस्तु के साथ शुभता जुड़ती है। अनुभवी ज्योतिषियों और विद्वानों के अनुसार, यह परंपरा भारत में सदियों से चली आ रही है और इसके पीछे एक बहुत ही गहरा अर्थ छिपा है। हमारे समाज में किसी भी वस्तु को सिर्फ इस्तेमाल की चीज या भौतिक सुख नहीं माना जाता। हम हर साधन को ईश्वर का आशीर्वाद या उनका प्रसाद मानते हैं।

● **हल्दी को क्यों माना जाता है शुभ**-पूजा-पाठ से लेकर विवाह जैसे शुभ अवसरों तक हल्दी का इस्तेमाल किया जाता है। इसे शुद्धता, आरोग्य, समृद्धि और शुभता से जोड़कर देखा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हल्दी भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी से भी जुड़ी मानी जाती है. यही वजह है कि कई शुभ कामों में हल्दी का प्रयोग किया जाता है।

● **कुमकुम लगाने का क्या मतलब है**-कुमकुम को हिंदू परंपरा में मंगल और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। पूजा के दौरान देवी-देवताओं को कुमकुम अर्पित करने की परंपरा भी है। कई धार्मिक मान्यताओं में इसे शक्ति और शुभ ऊर्जा से जोड़ा जाता है। नई वस्तु पर कुमकुम लगाने का उद्देश्य भी उसे शुभ मानकर भगवान का आशीर्वाद लेना माना जाता है। इसी वजह से नई गाड़ी की पूजा करते समय उसके आगे के किसी हिस्से पर कुमकुम से तिलक किया जाता है।

● **हल्दी-कुमकुम को देवी-देवताओं से जोड़कर क्यों देखा जाता है**-धार्मिक मान्यताओं में हल्दी और कुमकुम का संबंध अलग-अलग देवी-देवताओं और शुभ शक्तियों से जोड़ा गया है। हल्दी को समृद्धि और सौभाग्य से जोड़कर देखा जाता है, जबकि कुमकुम को शक्ति और मंगल का प्रतीक माना जाता है। कई परिवारों में हल्दी-कुमकुम को माता लक्ष्मी और देवी दुर्गा के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। इसलिए किसी नई चीज पर इन्हें लगाने का भाव यही होता है कि घर में सुख-समृद्धि बनी रहे और नई वस्तु शुभ फल दे।

● **हल्दी-कुमकुम लगाने से बुरी नजर से बचने की मान्यता**-भारतीय परंपराओं में हल्दी और कुमकुम को शुभता से जोड़ने के साथ-साथ नकारात्मकता से बचाव का प्रतीक भी माना गया है. कई परिवारों में मान्यता है कि नई वस्तु पर शुभ चिह्न बनाने से बुरी नजर और नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव दूर रहता है।

अगर हम इसे वैज्ञानिक नजरिए से देखें, तो हल्दी में शक्तिशाली एंटी-बैक्टीरियल (रोगाणुरोधक) गुण पाए जाते हैं। इसके इस्तेमाल से न सिर्फ हवा शुद्ध होती है, बल्कि वातावरण में एक पॉजिटिव एनर्जी फैलती है।

वहीं, आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यह एक संकल्प लेने जैसा है। नई चीज पर तिलक लगाकर हम खुद से और ईश्वर से यह वादा करते हैं कि हम इस नई सुविधा का उपयोग हमेशा अच्छे, सही और भलाई के कार्यों के लिए करेंगे। यह छोटी सी परंपरा इंसान को यह याद दिलाती रहती है कि जीवन में हमें जो भी सुख-सुविधाएं मिली हैं, वे सब ऊपर वाले की कृपा का ही नतीजा हैं। इसलिए, किसी भी नई चीज की शुरुआत हमेशा प्रभु का स्मरण करके और अपने अंदर के अहंकार को दूर रखकर ही करनी चाहिए।

■ पं. नित्यानंद

• रत्न संसार...

मूंगा रत्न

ज्योतिष शास्त्र में सभी रत्नों को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। हर रत्न का संबंध किसी ग्रह से होता है। रत्न शास्त्र में एक रत्न को अधिक फलदायी माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, मंगल को साहस, ऊर्जा, भूमि और पराक्रम का कारक माना जाता है। इस ग्रह का संबंध मूंगा रत्न से है। ऐसा माना जाता है कि इस रत्न को धारण करने से व्यक्ति की कुंडली में मौजूद मंगल दोष और कर्ज की समस्या दूर होती है, लेकिन इसको पहनने के शुभ परिणाम तभी प्राप्त होंगे, जब इसे शुभ दिन पहना जाए। मंगलवार के दिन सुबह स्नान करने के बाद एक कटोरी में दूध, जल और गंगाजल रखें। इसके बाद रत्न को कुछ समय के लिए कटोरी में डुबोकर रख दें। इससे रत्न शुद्ध हो जाता है और नकारात्मकता दूर होती है। अब पानी से साफ करने के बाद इसे हनुमान जी के चरणों में रख दें। कुमकुम, अक्षत और लाल पुष्प अर्पित करें। प्रभु के नाम का ध्यान करें। दीपक जलाकर मंगल देव के बीज मंत्र का सच्चे मन से जप करें। इसके बाद अंगूठी को अनामिका उंगली में धारण कर लें। इस दिन रत्न को पहनने के लिए तांबे, सोने या फिर अष्टधातु जड़वाकर पहनना शुभ माना जाता है। इस रत्न को चांदी में पहनना शुभ नहीं माना जाता है।

• हल्दी...

पीला रंग भगवान विष्णु का सबसे प्रिय रंग है, जिन्हें 'पीतांबरधारी' भी कहा जाता है। विवाह जैसे मांगलिक कार्यों में विष्णु जी की पूजा मुख्य रूप से होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, हल्दी लगाने से दूल्हा-दुल्हन को भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का साक्षात आशीर्वाद मिलता है, जिससे उनके नए सफर में सुख और समृद्धि बनी रहती है। हमारे धर्म में अग्नि देव को साक्षी मानकर विवाह संपन्न होता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित